Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

29

विनोदकुमार शुक्ल की रचनाओं में अध्यात्मिक रहस्यवाद तथा जादूई यथार्थवाद

डॉ. योगेश गोकुल पाटील
मार्गदर्शक, उपप्राचार्य एवं हिंदी विभाग अध्यक्ष
विद्यावर्धिनी महाविद्यालय, धुले विद्यावर्धिनी महाविद्यालय, धुले

स्वाती सम्राट ओसवाल
शोध छात्रा
विद्यावर्धिनी महाविद्यालय, धुले विद्यावर्धिनी महाविद्यालय, धुले

प्रस्तावना: विनोदकुमार शुक्ल हिंदी साहित्य के अनमोल रत्न है। उनके कथा-साहित्य में संवेदनशीलता, प्रयोगधर्मिता, जादूई यथार्थवाद तथा अध्यात्मिक रहस्यवाद का अद्वितिय समन्वय देखने के लिए मिलता है। उनके साहित्य में मर्मस्पर्शिता तथा विघटित मूल्यों के प्रति जन्मा जादूई यथार्थवाद तथा अध्यात्मिक रहस्यवाद है। उनके साहित्य में सिग्मंड फ्राईड का मनोविश्लेषणवाद भी स्पष्ट दिखाई देता है। हमारे व्यवहार और व्यक्तित्व पर अचेतन मन का प्रभाव होता है। बचपन के सुख, दुखों के अनुभव तथा जैविक इच्छाएँ और सुख की तलाश हमारे अचेतन मन में गहराई से स्थित होती है। यह अचेतन मन उत्कृष्ट सृजनात्मक कार्य करवाता है। इसीके साथ-साथ एरिक एरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धांत के चिह्न भी परिलक्षित होते है। जैक्स लाकन का संरचनात्मक सिद्घांत जो हमें वास्तविकता का अनुभव करना तथा अचेतन मन को आकार देना सिखाते है। अध्यात्मिक धरातल पर उनका साहित्य सीधा-सीधा ध्यान की गहराई को दर्शाता है तथा आत्मपरीक्षण से आत्मसाक्षात्कार तक का मार्ग दशत्ति है। शुक्ल जी निम्नमध्यमवर्गीय तथा नौकरीपेशा वर्ग के आम जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों को कल्पनात्मक प्रभाव के साथ प्रस्तुत करते है जो उनकी रचना को अनूठी बनाता है।

जादुई यथार्थवाद संकल्पना : यह साहित्य और कला की एक ऐसी शैली है जहाँ जीवन से अवास्तविक तत्त्वों से जोड़ा जाता है। असाधारण घटनाएं सत्य जीवन को काल्पनिक तथ्यों से जोड़ती है। इसके पात्र इन जादुई घटनाओं पर आश्चर्य व्यक्त नहीं करते बल्कि उन्हें सामान्य मानते है। जादू की इस अवधारणा का प्रयोग साहित्य में रहस्य, आश्चर्य या मनोरंजन और घटनाओं को मोड देने के लिए किया जाता है। वास्तविकता तथा जादुई कल्पना और अलौकिक बातों को इस तरह मिलाया जाता है मानो दोनों भी एकाकार हो। यह शैली बिसवी सदी में लैटिन अमेरिका से शुरू हुई और दुनिया भर में फैल गई। विनोदकुमार शुक्ल को उनकी रचनाओ के लिए 2025 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भारतीय साहित्य के लिए एक सहज , संवेदनशील तथा नवाचारी धारा को मिला है। शुक्ल हिंदी के उन विरले साहित्यकारों में से है, जिन्होंने शब्दों को साधने के लिए शोर नहीं मचाया बल्कि चुपचाप एक ऐसी दुनिया रची, जो अपनी मौलिकता, गहराई और मासूमियत में अनोखी है। चाहे उनकी कविताएँ हो या उपन्यास - हर रचना में एक अनकही तरलता है, जो भीतर तक उतर जाती है। वे गाँव, चिड़ियाँ, पेड़, बच्चे, खिडकियों जैसे प्रतिकों का उपयोग कर अध्यात्म के रहस्यवाद को छू लेते है।

विनोदकुमार शुक्ल की रचनात्मकता में जादुई यथार्थवाद तथा अध्यात्मिक रहस्यवाद के प्रमुख तत्त्व:

अ) वास्तविक जीवन के संघर्ष का जादुई दृष्टि से समन्वय: आपके साहित्य केवल बौद्धिकता नहीं, बल्कि संवेदनशीलता और गहरे अध्यात्मिक धाराओं को समेटते है। उन्होंने अपने उपन्यासों 'नौकर की कमीज', दिवार में एक खिड़की रहती थी', खिलेगा तो देखेंगे' और कविताओं में सब कुछ होना बचा रहेगा', 'लगभग जयहिंद' में साधारण जन-जीवन को असाधारण ढंग से प्रस्तुत किया है। शुक्ल का उपन्यास 'नौकर की कमीज 1979 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का पात्र सन्तुबाबू एक छोटे शहर का क्लर्क है जो अपनी जिंदगी को सादगी और मजबूरी में जीता है। उसकी कमीज कहानी का केंद्र बनती है। कहानी का नायक, सिमित वेतन में परिवार चलानेवाला सरकारी कर्मचारी है। हमेशा दबाव और हीन भावना में जीनेवाला उसका अधिकारी साहब ऊँचे पद पर पर आसीन है तथा उसपर हमेशा दबाव डालता है। उसकी पत्नी पति के परेशानियों का साथ निभानेवाली महिला है। साहब उसे फटकारते हुए कहते है- " कमीज ठीक से पहनकर नहीं आता इसलिए कमीज ढंग से सिलवाकर पहने।" संन्त बाबू के लिए कमीज खरीदना भी बड़ा खर्च है। वह पुरानी कमीज के बटन ठीक करता है, धोकर कडक इस्त्री करता है लेकिन फिर भी अधिकारियों की नजर में वह हमेशा नौकर' ही रहता है। उसे लगता है कि सम्मान पाने के लिए इंसान को कपड़ों से क्यों आँका जाता है? एक दिन वह थोडी बचत जोड़कर नई कमीज सिलवाता है और साहब उसकी तारीफ करते है। लेकिन संतुबाबु समझ जाता है कि लोग इंसान नही, कमीज देखते है। " मेरी कमीज तो सादी है, लेकिन क्या इसका मतलब मैं कमतर हूँ।" यहाँ पर मजदूर, निम्न वर्ग की आर्थिक और मानसिक पीड़ा अभिव्यक्त होती है। "आपकी फटी कमीज़ इज्जत है, मेरी फटी कमीज़ शर्म क्यों?" उनकी 'दिवार में एक खिड़की रहती थी' एक तरह से जादू जादूई यथार्थवाद तथा अध्यात्मिक रहस्यवाद का बेमालूम संमिश्रण है। निम्न मध्यमवर्गीय जीवन का साक्षात्कार करते हुए यह उपन्यास गरीबी में, अभावों में भरे हुए जीवन को भी सुखद क्षणों से भरने तथा अंधेरे जीवन में प्रकाश की खिड़की खोलने का संदेश देता है। शुक्ल जी को इस उपन्यास के लिए 1999 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस उपन्यास में रघुवर प्रसाद एक गणित के शिक्षक अध्यापक है जो अपनी पत्नी सोनसी के साथ एक कस्बे के मोहल्ले में रहते है। रघुवर प्रसाद आठ सौ रूपए की तनख्वाह पर आठ किलोमीटर दूर एक महाविद्यालय में अध्यापक है। उनके छोटे से घर के कमरे में एक खिड़की है जिसका प्रतिकात्मक प्रयोग कर उन्होंने अचेतन मन में छिपे रहस्यों को उद्घाटित किया है। नौकरीपेशा वर्ग का संघर्षभरा जीवन, पत्नी सोनसी का कमखर्च में घर

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

चलाना, अपने मानसिक त्रासदी का तनाव कम करने के लिए खिड़की को मित्र समझकर कई संभावनाओं से अपने मन को शांत करना। यह सब इतना सहज, सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया है। रघुवर प्रसाद का 10 वर्षीय छोटा भाई और माता-पिता पचास कि.मी. की दूरी पर एक गाँव में रहता है। जब अक्सर खालीपन होता रघुवीर रघुवर खिड़की के पास बैठा रहता अतः खिड़की के पार एक अलग दुनिया की कल्पना करता। इस जादुई कल्पना में एक युवा साधु है जो रघुवर प्रसाद को महाविद्यालय में लाने ले जाने का काम भी करता है। खिड़की के भीतर का संसार उसकी गृहस्थी है वहीं खिड़की से बाहर का संसार दूसरी तरफ खुलनेवाली एक जादुई दुनिया है। इस जादुई दुनिया में चाँदनी, हाथी, बूढी अम्मा यह पात्र है। इस दुनिया में पेड़, पौधे, हाथी इनके माध्यम से मानव - प्रकृति संबंध दर्शाया गया है। रघुवर प्रसाद और सोनसी प्रायः खिड़की के बाहर कूदकर इस संसार में विचरते है, तालाब में नहाते है हवाओं के साथ झूमते हुए उड़ते हैं।" उसने खिडकी के बाहर झाँका और उसे लगा जैसे बाहर का आकाश उसके अंदर खुल गया हो।"यहाँ ऐसे लगता है मानो कोई साधक आज्ञा चक्र पर अपना ध्यान केंद्रित कर अंदर की धारा में बह रहा हो और अपनी कुंडलिनी शाक्त को जागृत कर चुका हो। अब सधे हुए सिद्ध साधक को जो आभास होता है, तेज दिव्य रोशनी, अनहद नाद, चमत्कृत दृश्य, लेखक उस अलौकिक आकाश के बारे में बात कर रहा है। बाहर का दृश्य भी व्यक्ति के भीतर की दुनिया को प्रभावित करता है।"" खिड़की के बाहर को दुनिया उसका अचेतन मन है जहाँ पर उसकी अधुरी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ सच का रूप लेती है। मन के तनावों को वह आशाभरी तरंगों से विलयन कर लेता है। यह इस उपन्यास का केंद्रभाव है। आज आधुनिक मानव काम की व्यस्तता में अपने-आप को भूला चुका है। आत्मसाधना, आत्मसाक्षात्कार ही जीवन का परम लक्ष्य होता है। आत्मपरीक्षण करना अपने आप में सरल लेकिन मन को शांत करने का बेहतर उपाय है। आत्मा तथा परमात्मा के मिलन से पहले आपको मन का नियंत्रण जरूरी है। संभवतः लेखक इस पूरे उपन्यास में खिडकी और स्वयं के रिश्ते को अलग-अलग शब्दों में प्रस्तुत कर बिंबात्मक ढंग से मानव-मास्तष्क में इस बात को रेखांकित करना चाहता है। बचपन में याद किए हुए पहाड़े जैसे बार-बार बोलकर हम उसे निरंतर स्मरण-स्तर तक पहुंचा देते हैं। यहाँ पर बुद्धिमंथन के तरीके का प्रयोग कर लेखक पाठक के अचेतन मन को हिलाकर रखता है। है। वह शांत तरीके से अनुप्रास अलंकार की तरह मानव को समझाने में लगा है कि मानव तुम बाहरी संसार के साथ-साथ अपने अंतर मन भी झाँक लो। तुम्हारा असली जीवन तुम्हें यहीं मिलेगा। तुम्हारे अचेतन मन में छिपी इच्छाओं को समय दो ।वह तुम्हारे जीवन में क्रांति लाएगा तथा परलौकिक दुनिया में अस्तित्व बनाएगा। रघुवर प्रसाद खिड़की के पास बार-बार बैठता है जैसे वह उसकी साथी बन चुकी हो। वह खिड़की अब आईना बन चुकी है जिसमें वह सिर्फ चेहरा नहीं, अपनी आदतें, अपनी पुरानी सोच, बचपन के खोए हुए दिन देखता है। वह सोचता है कि क्या जिंदगी बस आगे बढ़ते रहना है या कभी-कभी कुछ पल रुककर एक किसी खिड़की से बाहर झांकना भी जरूरी है। इसका अर्थ यह है कि अपनी व्यस्तता में भी स्वयं को समय देना चाहिए। स्वयं के गुण-दोषों को परखना चाहिए। आत्मसाक्षात्कार के लिए योग, ध्यान साधना को अपनाना चाहिए। सूक्ष्म स्तर पर यह उपन्यास नहीं आत्मपरीक्षण करने के लिए प्रेरित करता हुआ दीपस्तंभ है। लेखक कहते है कि हर किसी की जिंदगी में कोई ऐसी जगह होनी चाहिए जहाँ वो जा सके, बैठ सके ,कुछ ना कुछ कह सके क्योंकि जिंदगी में सबकुछ समझना नहीं होता बल्कि अनुभवों से सच को जानना होता है। "5 इस उपन्यास में पति-पत्नी केवल संवाद नहीं बल्कि मन की आशाओं, आकांक्षाओं और अपूर्ण स्वप्नों तथा उनके मासूम हृदय से खिड़की के साथ अनकहा संवाद करते है। आ)अजीब पर साधारण लगली चीजे -

इस उपन्यास में खिडकी केवल वस्तु नहीं बल्कि सजीव बोलते जीव की तरह दिखाया गया है। जैसे सपने, रोशनी, बंदिश सब मानव से जुड़ जाते हैं। "दीवारें चारों तरफ थी, पर खिडकी खुली थी, तो सब कुछ खुला था।" लेखक खिड़की के माध्यम से अपने बचपन में जो बातें अधुरी रह गई उनको काल्पनिक उड़ानों से भर देना चाहता है। जो साधु लेखक को काल्पनिक हाथी पर बैठाकर रोज महाविद्यालय छोडता है। वह साधु कहता है -" हाथों को किसी से भय नहीं, फिर भी वह विनम्र है।" हाथी का कथन अहंकार में चलोगे तो गिरोगे ठहरकर चलोगे तो पहुंचोंगे। " इन प्रतिकों का प्रयोग कर मानवीय मूल्यों को संवेदना स्तर पर पहुंचता है।

भाषा की जादूई प्रकृतिः रोजमर्रा की चीजों को इस तरह प्रयोग कर लिखते है कि वे जीवित, चमत्कारी हो जाती है। खिड्की, कमीज, दीवार ये सब चरित बन जाते है। वस्तुओं का मानवीयकरण, संवेदना प्राप्त हो जाती है। इनके माध्यम से वे मानवजीवन के अभाव, खालीपन को विविध रंगों से भर देता है।

खिड़की को दोस्त, आईना, नदी, समंदर के समान बताकर कम शब्दों में गहरे अर्थ को अभिव्यक्त करता है। वह खिड़की को समुंदर मान लेता है कभी खाली मैदान मानकर अकेला चल रहा है जैसे बिना मंजिल के खुद से बातें करता है। कभी काल्पनिक लोगों से बाते करता है तो किसी बच्चे की तरह वह अकेले ही खेलते हुए पूरी दुनिया बसा लेता है। कभी वह बचपन की स्मृतियों में माँ, पिताजी का छोटा घर, मिट्टी के आँगन में हिलोरे खाता है। कभी दोस्त बनकर उसके बोझिल मन के तारों को झंकृत कर शांत भी करता है।

नायक और खिडकी का मनोसंवाद - "अगर तुम चाहो तो रोज नई दुनिया देख सकते हो। बस खुलने का साहस बनाए रखना।" यहाँ पर अहम् पराहम तथा लौकिक का तारतम्य अलौकिक

के साथ है। वाक्य के भिन्नार्थ लिए जा सकते है। हाथी का संवाद "शक्ति तब सुंदर बनती है, जब किसी को चोट न पहुँचाए। मैं बड़ा जरूर हूं लेकिन किसी की राह रोकने के लिए नहीं। दुनिया सभी की है - छोटे की भी, बड़े की भी।" "मन बिना दीवार का घर है - जितना फैलाओगे

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

उतना बढ़ेगा। " यहाँ पर सिगमंड फ्राईड के मनोविश्लेषणवाद की गहरी छाप दिखाई पड़ती है। मन ही संसार में हर कार्य के पिछे का अंतिम सच है। यहाँ पर दीवार बोलती है "मैं स्थिर हूँ, अडिग है, पर मैं भी चाहती हूं कि मेरे भीतर से रोशनी गुजरे। खिडकी मेरी कमजोरी नहीं, मेरा गर्व है. वह बताती है कि मेरे भीतर भी आसमान तक जाने की जगह है।" जादुई यथार्थवाद की उपयोगिता : हाथी, साधू, दीवार, खिड़की इन प्रतिकों केमाध्यम से मानव से इनका दार्शनिक संबंध प्रस्थापित होता है। मानव के जीवन में दुख अधिक है तथा सुख के पल कम है। संभवतः दुखों का प्रभाव मानव-मन से कम करने के लिए खिडकी' को प्रतिक रूप, बिंब रूप में प्रयोग कर खिडकी - एक दोस्त, एक रिश्तेदार, भगवान, परिचित व्यक्ति कोई भी बन जाती है जिससे मन की बात साँझा कर मनोवेगों को शांत किया जा सकता है। खिड़की

यहाँ जीवन के सुखद क्षणों को विस्तृत रूप देती है यथार्थ के कैनवस पर विविध मनतरंगों से रंग भरती हैं।रघुवर प्रसाद और सोनसी जैसे युगल जो भारतीय निम्न मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है जो अभावों में भी जी सकने और अपना हृदय विशाल बना कर जीवनयापन करने का हौसला रखते है। आजकल की तेज रफ्तार वाली दुनिया में आत्मनियंत्रण कितना जरूरी है तथा आज की दुनिया के पाठकों को यह प्रेरणात्मक कहानी समय ठहराव जरूरी है।इन बातों को अपने आत्मा तक उतरकर स्थितियों के साथ समझौता कर शांतिमय जीवन जी सकते है।यह प्रेरणा मिलती है इसमें सामाजिक कल्याण की भावना नीहित है। जैसे की गरीबी में कमीज की आकांक्षा यह सामाजिक असमानता को दिखाती है। सपने आशा और कल्पना को दर्शाते है ,खिड़की की रोशनी आजादी का प्रतिक बन जाती है। मानवीयकरण अलंकार का प्रयोग कर लेखक ने 'अचेतन मन' जहाँ हम जो सोचते है वह संगठित होता है। अचेतन मन के शक्ति को प्रभावी तौर पर पाठकों के हृदय तक पहुंचाने में सहयोग किया है। शुक्ल जी ने सामाजिक, मानसिक, अध्यात्मिक उत्थान हेतु पाठकों तक प्रभावी माध्यम से यह बात पहुँचाई है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विनोद कुमार शुक्ल जी ने निम्नवर्गीय मानव के जीवन के पहलुओं को जीव-अजीव संबंधों को, जादुई यथार्थवाद तथा अध्यात्मिक रहस्यवाद को चित्रित किया है। मनोविश्लेषणवाद, एरिक एरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धांत जैक का संचनात्मक सिद्धांत भी शामिल है। उनके साहित्य में अलंकारिक, क्लिष्ट भाषा नहीं वरन जादुई यथार्थवाद है जो साज-सज्जा से रहित उनके साहित्यिक स्वभाव का मूल तत्त्व है।

यही विशेषता उन्हें साधारण लेखक से असाधारण लेखक के व्यक्तित्व की ओर ले जाती है। उनके साहित्य ने सत्त्वाई स्थिति को कल्पना की गहराई दी है। इसलिए उन्होंने जादूई यथार्थवाद को जो पहचान दी है वह अनन्यसाधारण है। हिंदी साहित्य जगत् में उनका स्थान अनमोल रत्न की तरह है।

संदर्भ -

1. विनोदकुमार शुक्ल - 'नौकर की कमीज' पृ.117
2. वि. शुक्ल- नौकर की कमीज प्र. 123, राजकमल प्रकाशन
3. वि. शुक्ल नौकर की कमीज पृ. 112, राजकमल प्रकाशन
4. वि. शुक्ल-दिवार में एक खिडकी रहती थी - पृ. 162
5. वि-शुक्ल -वहीं ५. 113
6. वहीं ५. 122
7. वहीं – 123
8. वहीं . 102
9. वहीं -पृ. 108
10. वहीं पृ. 163